धर्मशास्त्रों में विश्वास

रेटिंग:

विवरण: [illegible]

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं आस्था और अन्य इस्लामी मान्यताओं के छह स्तंभ

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए धर्मशास्त्रों में विश्वास इस्लामी आस्था का तीसरा स्तम्भ है।

हम धर्मशास्त्रों के रहस्योद्घाटन के चार मुख्य कारणों की पहचान कर सकते हैं:

(1) किसी नबी को प्रकट किया गया धर्मग्रंथ ईश्वर और साथी मनुष्यों के प्रति धर्म और दायित्वों को जानने के लिए एक संदर्भ बिंदु है। प्रकट शास्त्रों के माध्यम से ईश्वर स्वयं को प्रकट करते हैं और मानव की रचना के प्रयोजन की व्याख्या करते हैं।

(2) इसको उद्धृत कर, 'धार्मिक विश्वास और व्यवहार या सामाजिक व्यवहार के विषियों में इसके अनुयायियों के बीच विवादों और मतभेदों को सुलझाया जा सकता है।

(3) धर्मशास्त्र धर्म को भ्रष्टाचार और पतन से सुरक्षित रखने के लिए हैं, कम से कम पैगंबर की मृत्यु के बाद कुछ समय के लिए। वर्तमान समय में, हमारे पैगंबर मुहम्मद, (ईश्वर की दया और आशीर्वाद उन पर हो) को क़ुरआन प्रकट हुई, और यह एकमात्र धर्मशास्त्र है जो भ्रष्ट होने से बचा हुआ है।

(4) यह मनुष्यों को देने के लिए ईश्वर का प्रमाण है। मनुष्यों को इसके विपरीत जाने की अनुमति नहीं है।

किसी मुसलमान का दृढ़ विश्वास होता है कि दैवीय रूप से प्रकट की गई पुस्तकें वास्तव में दयालु ईश्वर द्वारा मानव जाति का मार्गदर्शन करने हेतु अपने नबियों को प्रकट की गई थीं। केवल कुरआन ही ईश्वर का बोला गया शब्द नहीं है, बल्कि ईश्वर ने पैगंबर मुहम्मद से पहले भी नबियों से बात की थी।

"...और मूसा से ईश्वर ने सीधे बात की।" (कुरआन 4:164)

ईश्वर सच्चे विश्वासियों का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि:

"...उस पर विश्वास करो जो तुम (मुहम्मद) पर उतारा गया है और जो तुमसे पहले नीचे भेजा गया है..." (कुरआन 2:4)

सभी धर्मग्रंथों का सबसे महत्वपूर्ण और केंद्रीय संदेश केवल और केवल ईश्वर की पूजा करना था।

"और तुम्हारे आगे भेजे गए सभी पैगम्बरों को हमने प्रकट किया और बोला, मेरे सिवा कोई ईश्वर नहीं, इसलिए मेरी उपासना करो।'" (कुरआन 21:25)

इस्लाम अपने वर्तमान स्वरूप में किसी भी अन्य आकाशीय धर्म की तुलना में पवित्र रहस्योद्घाटन के सम्बन्ध में अधिक समावेशी (शामिल)है।

मुसलमान निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का पालन और सम्मान करते हैं:

(i) पैगंबर मुहम्मद को प्रकट कुरआन।

(ii) पैगंबर मूसा (आज पढ़े जाने वाले पुराने नियम से अलग) को प्रकट तोराह (अरबी में *????*)।

(iii) पैगंबर जीसस (आजकल गिरजाघरों में पढ़े जाने वाले नए नियम से अलग) को प्रकट गॉस्पेल (अरबी में *?????*)।

(iv) डेविड के साम्स (अरबी में *?????*)।

(v) मूसा और अब्राहम के स्क्रॉल (अरबी में *?????*)।

तीसरा, मुसलमान इन सभी में जो कुछ भी सच है और न तो बदला गया है और न ही जानबूझकर गलत अर्थ में समझा गया है, उसमें विश्वास रखते हैं।

चौथा, इस्लाम इस बात की पुष्टि करता है कि ईश्वर ने कुरआन को पिछले धर्मग्रंथों पर एक साक्षी के रूप में प्रकट किया और उनकी पुष्टि की, क्योंकि वे उसमें कहते हैं:

"और हमने तुम्हारे पास (ऐ मुहम्मद) यह सच्ची किताब (कुरआन) उतारी है, जो उन धर्मशास्त्रों की पुष्टि करती है जो इससे पहले आई थी और यह विश्वासयोग्य है और उन (पुराने ग्रंथों का संग्रह) पर एक साक्षी है..." (कुरआन 5:48)

अर्थ है कि कुरआन पिछले धर्मग्रंथों में जो कुछ भी सच है उसकी पुष्टि करती है और मनुष्यों ने जो भी परिवर्तन और परिवर्धन किए हैं उन्हें अस्वीकार करती है।

मूल धर्मशास्त्र और बाइबिल

हमें दो विषयों के बीच अंतर करना चाहिए: *???* तोराह, गॉस्पेल (सुसमाचार), और साम्स (भजन) और *???????* की बाइबिल। *??? ??????* ईश्वर के रहस्योद्घाटन थे, लेकिन *???????* की बाइबिल में सटीक मूल ग्रंथ *????* है।

कुरआन के अतिरिक्त आज ऐसा कोई दैवीय ग्रंथ अस्तित्व में नहीं है जो जिस मूल भाषा में प्रकट किया गया था उसी में उपलब्ध हो। बाइबिल को अंग्रेजी में प्रकट नहीं किया गया था। आज की बाइबल की विभिन्न पुस्तकें अधिक से अधिक तृतीयक अनुवाद हैं और विभिन्न इसके संस्करण मौजूद हैं। ये कई अनुवाद उन लोगों द्वारा किए गए थे जिनका ज्ञान, कौशल या सच्चाई ज्ञात नहीं है। परिणामस्वरूप, कुछ बाईबल दूसरों की तुलना में बड़ी हैं और इनमें अंतर्विरोध और आंतरिक विसंगतियां हैं! कोई मूल पुस्तक उपलब्ध नहीं है। दूसरी ओर, कुरआन एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो अपनी मूल भाषा और शब्दों सहित जस की तस आज अस्तित्व में है। कुरआन के एक भी अक्षर को उसके रहस्योद्घाटन के बाद से नहीं बदला गया है। यह आंतरिक रूप से संगत है और कोई विरोधाभास इसमें नहीं हैं। यह आज वैसी ही है जैसा कि 1400 वर्ष पूर्व प्रकट हुई थी, जो याद रखने और लिखने की ठोस परंपरा द्वारा प्रसारित की गयी थी। अन्य पवित्र ग्रंथों के विपरीत, पूरे कुरआन को लगभग हर इस्लामी विद्वान और सैकड़ों हजारों सामान्य मुसलमानों ने पीढ़ी दर पीढ़ी कंठस्थ किया है!

पिछले धर्मशास्त्रों में अनिवार्य रूप से सम्मिलित हैं:

(i) मनुष्य की रचना और पहले के राष्ट्रों की कहानियाँ, जो आने वाला था उसकी भविष्यवाणियाँ जैसे न्याय के दिन से पहले के संकेत, नए पैगम्बरों की उपस्थिति और अन्य समाचार।

सनिेगोग और गरिजाघरों में आजकल पढ़ी जाने वाली बाइबल की कहानयिाँ, भवष्यिवाणयिाँ और समाचार आंशकि रूप से सत्य और आंशकि रूप से झूठे हैं। इन पुस्तकों में ईश्वर द्वारा प्रकट मूल धर्मशास्त्र के कुछ अनुवादति अंश, भवष्यिवक्ताओं के शब्द, वद्विानों के स्पष्टीकरण, लेखकों-शास्त्रयिों की त्रुटयिों और कुछ दुर्भावनापूर्ण सम्मलिन और वलिोपन (काट-छांट) शामलि हैं। कुरआन, अंतमि और वश्विवसनीय ग्रंथ, हमें कल्पना से तथ्यों को समझने में मदद करता है। एक मुसलमान के लिए, यह इन कहानयिों में असत्य और सत्य को पहचानने की कसौटी है। उदाहरण के लिए, बाइबल में अभी भी कुछ स्पष्ट अंश हैं जो ईश्वर के एकत्व की ओर इंगति करते हैं।[1] साथ ही, पैगंबर मुहम्मद के बारे में कुछ भवष्यिवाणयिां भी बाइबलि में पाई जाती हैं।[2] फरि भी, ऐसे अंश अस्तत्वि में हैं, यहां तक कि पूरी कतिाबें मौजूद हैं, जन्हिें लगभग पूरी तरह से जाली और मनुष्यों की करतूत के रूप में जाना जाता है।[3]

(ii) वधिि और नयिम, अनुमत और नषिद्धि, जैसे मूसा का कानून।

अगर हम पछिली कतिाबों में नहिति कानून को *???* भी लें, यानी कि जो वैध और जो नषिद्धि है, और यह भ्रष्ट भी नहीं हुआ हो, तो भी कुरआन उन नयिमों को नरिस्त करता है, यह उन पुराने कानून को रद्द करता है जो अपने समय के लिए उपयुक्त था और आज लागू नहीं है । उदाहरण के लिए, इस्लामी कानून द्वारा आहार, धार्मकि प्रार्थना, उपवास, उत्तराधकिार, ववािह और ववािह-वच्छिेद से संबंधति पुराने कानूनों को रद्द कर दयिा गया है (या, कई मामलों में, इनकी पुष्टि की गई है)।

पवत्रि कुरआन

कुरआन अन्य धर्मग्रंथों से नम्निलखिति संबंधों में अलग है:

(1) कुरआन चमत्कारपूर्ण और अननुकरणीय है। इसके समान कुछ भी मनुष्य द्वारा नरि्मति नहीं कयिा जा सकता है।

(2) कुरआन के बाद, ईश्वर द्वारा कोई और धर्मशास्त्र प्रकट नहीं कयिा जाएगा। जसि तरह पैगंबर मुहम्मद अंतमि पैगंबर हैं, उसी तरह कुरआन अंतमि ग्रंथ है।

(3) कुरआन को परविर्तन से बचाने, भ्रष्ट होने से बचाने और वकिृतयिों से बचाने का जम्मिा ईश्वर ने अपने ऊपर लयिा है। दूसरी ओर, पछिले धर्मशास्त्रों में परविर्तन और वकिृतयिां आ गयी हैं और वे अपने मूल रूप में नहीं है।

(4) कुरआन, एक ओर, पुराने धर्मशास्त्रों की पुष्टि करता है और दूसरी ओर उन ग्रंथों पर एक साक्षी है।

(5) क़ुरआन उन्हें निरस्त करता है, जिसका अर्थ है कि यह पिछले धर्मग्रंथों के फैसलों को रद्द करता है और उन्हें अनुपयुक्त कहता है। पुराने धर्मशास्त्रों के कानून अब लागू नहीं होते; इस्लाम के नए कानून के साथ पिछले नियमों को निरस्त कर दिया गया है।

फ़ुटनोट:

[1] उदाहरण के लिए मूसा की घोषणा: "हे इस्राएल, सुनो, हमारा स्वामी हमारा ईश्वर ही एक ईश्वर है" (व्यवस्थाविवरण 6:4) और यीशु की घोषणा: "...सभी आज्ञाओं में से पहली है, सुनो, हे इस्राएल; हमारा स्वामी हमारा ईश्वर एक ईश्वर है" (मरकुस 12:29)।

[2] देखें (व्यवस्थाविवरण 18:18), (व्यवस्थाविवरण 33:1-2), (यशायाह 28:11), (यशायाह 42:1-13), (हबक्कूक 3:3), (यूहन्ना 16:13), (यूहन्ना1:19-21), (मत्ती 21:42-43), एवं और।

[3] उदाहरण के लिए अपोक्रिफा की पुस्तकें देखें।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/36

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।